डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½

राम-रहीम

मौत का दूत

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00 1/2

राम-रहीम

राम-रहीम एक कान्वेण्ट स्कूल में पढ़ते हैं। जासूसी उनका शौक है। इसी शौक में ही वे बाल सीक्रेट सर्विस के एजेण्ट बन जाते हैं। इस सीक्रेट सर्विस के चीफ कर्नल मुखर्जी हैं, जो कि मिलेट्री के रिटायर्ड आफिसर हैं। राम-रहीम ने 'भूत-महल' और 'ड्राक्यूला बालक' वाला केस किस बहादुरी और बुद्धिमानी से हल किया, यह आप मनोज चित्रकथा के पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं। अब प्रस्तुत है उनका नया कारनामा—

मैं स्कूल की ओर से सेठ करोड़ीमल जी का स्वागत करता हूँ और उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने विचार आपके सामने रखें।

धन्यवाद प्रिंसिपल साहब!

एक दिन राम-रहीम के स्कूल में सालाना जलसा हुआ।
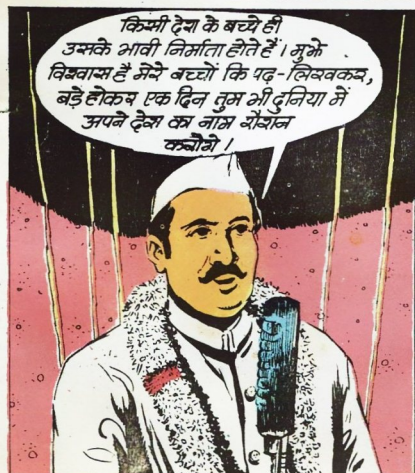
जलसे में बच्चों को इनाम भी बांटे गये।
राम-रहीम हमारे स्कूल के सबसे होनहार विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि खेल-कूद में भी सबसे आगे हैं, सभी बच्चों को इनसे शिक्षा लेनी चाहिये।
हम हमेशा आपके बताये हुए मार्ग पर चलेंगे श्रीमान्!
शाबाश मेरे बच्चों!

जलसा समाप्त हुआ।
राम भइया, कितने अच्छे और ऊँचे विचार हैं सेठजी के।
हां! शहर के सबसे बड़े धनवान, लेकिन सीधे-साधे धर्मात्मा! उनकी दया पर ही बहुत से स्कूल व अनाथाश्रम चल रहे हैं।

राम-रहीम स्कूल से बाहर निकले।
देश के सारे धनवान यदि सेठजी जैसे हो जायें तो कितना अच्छा हो। तब न केवल देश में कोई गरीब रहेगा, बल्कि दुनिया की नजरों में हमारा देश एक मिसाल बनकर रह जायेगा।
काश! यह सपना सच हो सकता।

यह सपना एक दिन अवश्य सच होगा राम भइया। आखिर तुम इतने निराश क्यों हो?
तभी—
ईश्वर के नाम पर कुछ दो बाबू!
वह देखो, जब तक हमारे देश के भावी निर्माता इस प्रकार भीख माँगते रहेंगे, तुम्हारा सपना कभी पूरा नहीं
रहीम
1584,
नगर
इस के

भगवान तुम्हारा भला करे बाबू!
राम भइया, एक तरफ तो तुम इन भीख मांगने वालों से नफ़रत करते हो और दूसरी तरफ तुम खुद ही इन्हें भीख देते हो।
न जाने क्यों इनकी हालत देखकर मुझे दया आ जाती है।
भगवान के नाम पर बाबू!
मुझे तो भइया इन पर नहीं, इनके माँ-बाप पर दया आती है, जो इन्हें अपना पेट भरने के लिए भीख मांगने पर मजबूर करते हैं।
माँ-बाप-अरे! ओह!
अचानक किसी विचार के आते ही राम चौंक उठा।
क्या हुआ तुम्हें-तुम चौंके क्यों?
भगवान के नाम पर!
वह लड़का-!
रहीम! मेरे साथ आओ।
आखिर कुछ बताओगे भी?
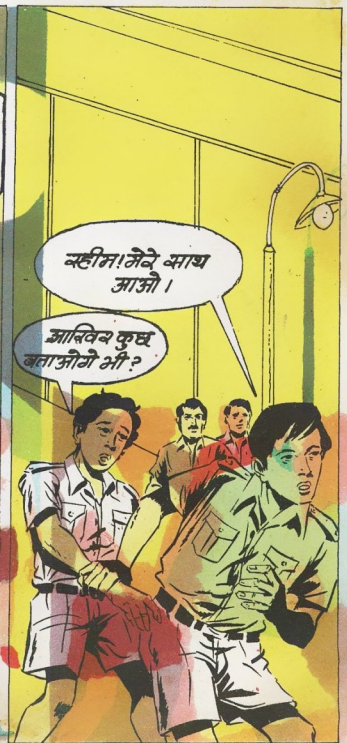
मुझे वह लड़का कुछ जाना-पहचाना-सा लगता है।
जाना-पहचाना? लेकिन कौन है? कहीं तुम उसकी भी जासूसी करने की तो नहीं सोच रहे?

राम रहीम के साथ पुनः उस भिखारी लड़के के पास पहुँचा।
ईश्वर के नाम पर बाबू!
तुम रामू हो न-माली राम भरोसे के लड़के?
आयं!

छः माह पूर्व तुम घर से भागे थे-तुम वही रामू हो न-?
न...हीं... तु... तुम कौन हो?
भिखारी लड़का राम के प्रश्नों से घबरा उठा।

तुम झूठ बोलते हो, तुम रामू ही हो। बताओ, तुम्हारी यह हालत किसने की? किसके लिए तुम भीख मांगते हो?

हां-मैं... मैं रामू ही हूं, लेकिन तुम कौन हो?

मैं राम और यह रहीम! तुम हमारे माली के भाई राम भरोसे के लड़के हो, पहचाना नहीं हमें?
ओह-तुम!

उनकी असलियत जानते ही वह लड़का भयभीत होकर घिसटता हुआ तेजी से सड़क पार करने लगा।
रुक जाओ रामू, वरना ट्रक के नीचे आ जाओगे।
नहीं-नहीं-मैं रामू नहीं हूँ-मैं कुछ नहीं जानता-वह मुझे मार डालेगा।

और तभी-
आ...ई... ई...!
ट्रक रामू को कुचलता हुआ आगे निकल गया।
रहीम, जल्दी से ट्रक का नम्बर नोट करो। उसने जानबूझकर रामू को कुचला है। मैं रामू को देखता हूँ!
लेकिन उस पर नम्बर प्लेट नहीं है।
ओह!
राम-रहीम खून से लथपथ रामू के निकट पहुंचे।
बेचारा अभागा!
प्लीज, हमारी मदद कीजिए। इसे हॉस्पिटल ले चलिए।
बेकार है। यह मर चुका है।
साले यह ट्रक वाले अन्धे होकर गाड़ी चलाते हैं।
यह मात्र एक एक्सीडेंट नहीं, बल्कि इसकी हत्या की गयी है। रहीम, तुम पुलिस को फोन करो।
अच्छा!
यह तुम कैसे कह सकते हो?
चलो भाई चलो-इस भिखारी के लिए हम क्यों झंझट में पड़ें।
कुछ देर बाद जब पुलिस वहां पहुंची तो भीड़ छंट चुकी थी।
इंस्पेक्टर अंकल, हमने अपनी आंखों से देखा है। उस ट्रक चालक ने इसे जान-बूझकर मारा है।
क्या बकवास है। यह महज एक एक्सीडेंट है। भला कोई क्यों इस भिखारी की हत्या करना चाहेगा!

बेशक यह एक गरीब और अपाहिज लड़का था इंस्पेक्टर अंकल, लेकिन हत्या, हत्या ही होती है - यह गरीबी-अमीरी का नहीं, कानून का प्रश्न है।
तुम छोकरों! मेरा दिमाग खराब मत करो। जाओ, अपना काम करो और मुझे अपना काम करने दो।
आखिर राम रहीम को खामोश हो जाना पड़ा।
उसी रात शहर से दूर एक मकान में-
यह देखो, हरी बत्ती हो गई- बॉस आने वाले हैं।
तभी-
नमस्कार बॉस!
गुड ईवनिंग बॉस!
क्या सारे छोकरे आ गये?
यस बॉस, रामू को छोड़कर। हमें मजबूरन उसे समाप्त करना पड़ा!
ओह! क्यों-?
बॉस, यदि हम ठीक समय पर उसे खत्म नहीं कर देते तो वे राम-रहीम नाम के छोकरे हमारी असलियत उससे जान लेने में सफल हो जाते।
शाबाश! यह तुम लोगों ने अक्लमंदी का काम किया। किसी को संदेह तो नहीं हुआ न?
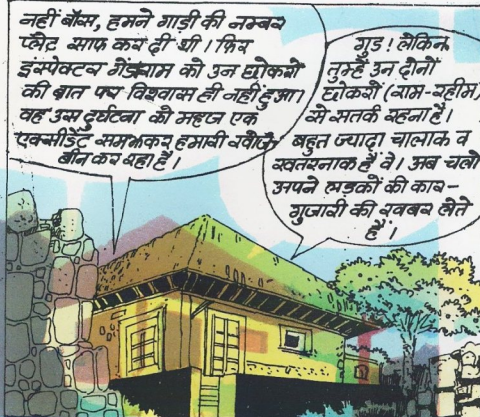
नहीं बॉस, हमने गाड़ी की नम्बर प्लेट साफ कर दी थी। फिर इंस्पेक्टर गेंदाराम को उन छोकरों की बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह उस दुर्घटना को महज एक एक्सीडेंट समझकर हमारी खोज बीन कर रहा है।
गुड! लेकिन तुम्हें उन दोनों छोकरों (राम-रहीम) से सतर्क रहना है। बहुत ज्यादा चालाक व खतरनाक हैं वे। अब चलो अपने लड़कों की कार-गुजारी की खबर लेते हैं।

उसके बाद स्याहपोश बॉस अपने गुर्गों के साथ एक लम्बे-चौड़े हाल में पहुंचा।
सलाम बॉस!
सलाम बॉस!
सलाम! दिनभर की रिपोर्ट पेश करो!
छोकरो, एक-एक करके अपना-अपना माल बॉस को पेश करो।

वे लड़के अपने बॉस के आधीन जरायम पेशा करते थे।
आज मैंने आठ पॉकेट मारी हैं बॉस। काफ़ी तगड़ी रकम हाथ लगी है।
शाबाश! तुम्हें आज तगड़ा इनाम मिलेगा।

रात में बॉस प्रतिदिन उनकी जरायम पेशे की कमाई अपने अधिकार में ले लेता था।
बॉस, मेरे हाथ आज तीन कीमती हार लगे हैं।
तुम बहुत अच्छे जा रहे हो शंकरा!

बॉस, मैंने आज नकली शराब की बीस पेटियां ग्राहकों को सप्लाई कीं- रकम इस थैली में है।
बहुत बढ़िया, हमारी शराब से देश की आबादी तो कम होगी ही, साथ ही साथ लोगों की पीने की लत भी छूट जायेगी।

और तुम्हारा क्या रहा छोकरे?
मैं आपके बताये हुए आदमी से मिला था बॉस, आपका दिया सोने का बैग मैंने उसे दे दिया। बदले में उसने अफीम, कोकीन और चरस के ये पैकेट दिये। उसका कहना है कि माल की खपत और ज्यादा होनी चाहिये।
खपत जरूर बढ़ेगी। आजकल की नई पीढ़ी तेजी से नशीले द्रव्यों का सेवन करने की आदी होती जा रही है। पूरे देश को हमें नशे का आदी बनाने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।

दिलावर, तुम इसे उन लोगों के पते दे देना, जिन्हें यह माल पहुंचाना है।
यस बॉस!

और तुम सुनो लड़के, काम होशियारी से होना चाहिये।
आप निश्चिंत रहें बॉस!

और तुमने आज कितनी आमदनी की कालू?
प्रन्द्रह रुपये तेरह पैसे की बॉस, यह रही। बॉस, आजकल लोग भीख देने में भी कंजूसी करते हैं।

आह-रहम बॉस!
तड़ाक
अब तुम दिन-प्रतिदिन निकम्मे और आलसी होते जा रहे हो। कल से यदि यह आमदनी नहीं बढ़ी तो तुम्हारी आंखें भी फुड़वा दूंगा!

और तुम कहां तक पहुंचे ठिग्गू?
बॉस! आज मौका पाकर मैंने मालिक की तिजोरी पर हाथ साफ कर ही दिया। बेचारा! वह मुझे मामूली-सा छोकरा समझ नौकर रखे हुए था। आज उसके विश्वास को मैंने चार चांद लगा दिये।

शाबाश ठिग्गू! माल कहां है?
वह रहा बॉस!

और तुम आज क्या लाये पतलू राम, मुफ्त की खा-खाकर तो तुम सांड हुये जा रहे हो।

ब... बॉस, मेरे हाथ आज भी कुछ नहीं लगा।

पहले इसकी आंखें फोड़ो। उसके बाद हाथ-पैर तोड़ देना। मुझे विश्वास है, इसे भीख सबसे ज्यादा मिलेगी।
नहीं- नहीं- मुझ पर रहम करो बॉस! आइन्दा से तुम जो कहोगे, मैं वही करूंगा!
अगले ही पल-
नहीं...न...हीं! आ...ई...ई...!
हा-हा-हा-!
ले जाओ इसे और मरहम पट्टी कर दो।
यस बॉस!
और छोकरो, मुझे विश्वास है कि तुम लोग अपना काम पूरी लगन, होशियारी और ईमानदारी से करोगे। अब जाओ और खा-पीकर मौज करो।
बच्चों के जाने के पश्चात-
इन बच्चों पर निगरानी और अधिक बढ़ा दो, क्योंकि वे दोनों जासूस छोकरे अवश्य रामू की मौत का रहस्य जानने की चेष्टा करेंगे। ऐसा न हो कहीं...।
ऐसा ही होगा बॉस, आप निश्चिंत रहें।
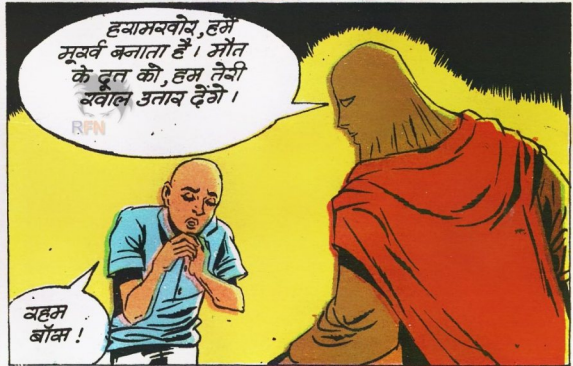
कोई नया शिकार हाथ आया ?
यस बॉस, तीन छोकरे। उम्मीद है, उन्हें भी जल्द ही अपने रंग में ढाल लेंगे हम।
मैं उन्हें देखना चाहता हूं।

उसके बाद वे एक अन्य कमरे में पहुंचे। वहाँ तीन लड़के कैद थे।
सड़ाक
आह, हमें मत मारो!
उफ-!

बोलो, हमारा कहना मानोगे या नहीं ?
नहीं-नहीं हम बुरा काम नहीं करेंगे।
अच्छा, तो और मार खाओ।

बॉस, काफी ढीठ लड़के हैं। काफी पिटाई होने के बावजूद भी तैयार नहीं हो रहे।
उफ!
हाए!

इनका बाप भी तैयार होगा। अभी इन्होंने मौत के दूत का भयानक रूप नहीं देखा।

छोकरो- अब भी मान जाओ, वरना मार-मारकर खाल उतार ली जाएगी।
नहीं-नहीं- हम तुम बदमाशों का कहना नहीं मानेंगे। आह-!
हमें छोड़ दो।
हमें घर जाने दो।

अच्छा, तुम छोकरों की यह हिम्मत! टाईगर, टॉम, बोगा। मार-मारकर इनकी चमड़ी उधेड़ दो, फिर भी न मानें तो छत से उल्टा लटका दो।

तब भी हम तुम्हारी राह पर नहीं चलेंगे।
आह!
कट जायेंगे, मर जायेंगे फिर भी नहीं!

लड़कों की जिद देखकर बॉस क्रोध से बिफर उठा—
इनकी आंखें फोड़ दो। हाथ-पैर तोड़ डालो। इतना बदसूरत बना दो कि इनके मां-बाप भी इन्हें न पहचान सकें-समझे!
यस बॉस!

अगले दिन सुबह—
अब तुम अखबार में ही खोये रहोगे या नाश्ते के लिए भी तैयार होगे।

तुमने अखबार पढ़ा रहीम?
हां, और यह भी देख लिया है कि रामू की मौत की खबर एक साधारण घटना के रूप में छपी है।

परन्तु शायद तुमने इस समाचार की ओर ध्यान नहीं दिया। शहर से आजकल गरीब तबके के कुछ लड़के रहस्यमय तरीके से लापता हो रहे हैं। कुछ ऐसे लापता लड़कों को पुलिस ने खोज भी निकाला है, लेकिन वे गूंगे, बहरे व लंगड़े-लूले मिले। रामू की तरह ही भीख मांगते हुये।

हाँ, यह समाचार मैंने भी पढ़ा है, लेकिन तुम कहना क्या चाहते हो?
उन लड़कों के अभिभावकों का कहना है कि जब वे घर से भागे अथवा लापता हुए थे, तब बिल्कुल ठीक-ठाक थे।
यानी तुम यह कहना चाहते हो कि उन्हें जानबूझ कर लूला-लंगड़ा, अंधा व बहरा-गूंगा किया गया होगा!
बिल्कुल, और मुझे यह भी विश्वास है कि इसके पीछे किसी भयानक गिरोह का हाथ है।
अच्छा अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ।
क्यों- कहाँ जाने का इरादा है?
बाद में बताऊंगा।
कुछ देर बाद जब वे तैयार होकर बाहर निकलने को हुए-
अरे- यह तुम दोनों सुबह-सुबह कहाँ चल दिये-?
कुछ जरूरी काम है मम्मी, लंच पर हमारा इंतजार न करना। हो सकता है शाम तक लौटें।
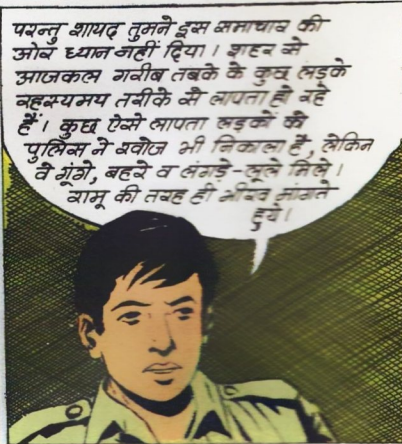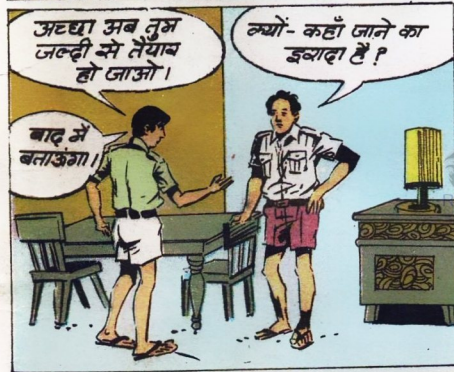
राम-रहीम मोटर साइकिल पर सवार होकर शहर का चक्कर लगाने लगे।
कहीं तुम फिर किसी भीख मांगने वाले लड़के की तलाश में तो नहीं ?
बिल्कुल ठीक समझे प्यारे भाई !

कुछ ही घंटों के पश्चात् एक स्थान पर-
राम भइया, वह देखो !
हाँ, रामू की ही तरह कोई भिखारी लड़का है- चलो कुछ दे आते हैं उसे !

मेरे विचार से हमें मोटर साइकिल यहीं छोड़ देनी चाहिये । उतरो !
यह तो ठीक है राम, लेकिन मेरे दिमाग में एक विचार आ रहा है।
अल्लाह के नाम पर।

क्या विचार आ रहा है- जरा हम भी तो सुनें ?
यदि रामू की जान-बूझकर हत्या की गई है तो यह साफ है कि अपराधी उस पर नजर रखे हुये था और वह अवश्य ही हमसे भी परिचित रहा होगा, वरना अकारण ही वह उसे न मारता । ऐसी हालत में कहीं इसे भी वह मार न दे।

उफ- यह तो मैंने सोचा ही नहीं था- वास्तव में इस समय तुमने बड़ी बुद्धिमानी की बात की है।
हम तो हमेशा ही अकलमंदी की बातें करते हैं- लेकिन तुम ही हमें नक्कारा समझते हो। खैर छोड़ो, आगे की सोचो।

ऐसा करो- तुम मेरे पीछे रहकर चारों तरफ निगाह रखना- हो सकता है उस पर नजर रखने वाला व्यक्ति तुम्हारी नजर में आ जाये- मैं उसके निकट जाऊँगा।
परन्तु बात तो...।

यह मूँछें मेरा हुलिया बदल देंगी- देखो।

थोड़ी देर बाद-
वाह राम भइया, इस समय तो तुम भी कोई छटे हुए बदमाश लग रहे हो।
तो फिर मैं चलता हूँ, तुम कुछ फासला रखकर मेरे पीछे आओ।

फिर राम उस भिखारी लड़के के निकट पहुँच गया। रहीम उससे कुछ फासले पर रुककर चारों ओर निगाहें दौड़ाने लगा।
अल्लाह तुम्हारा भला करे बाबू!
हुम्म! बेचारा अंधा भी है, वे राक्षस कितने जालिम हैं।
अल्लाह के नाम पर

सहसा भीख देते-देते राम के मस्तिष्क में एक विचार तेजी से आया और वह धीरे से बोला—
सावधान, पुलिस तुम पर निगाह रखे हुए है। रात यहीं काटना, अड्डे पर मत जाना।
ओह ! अच्छा-अच्छा !
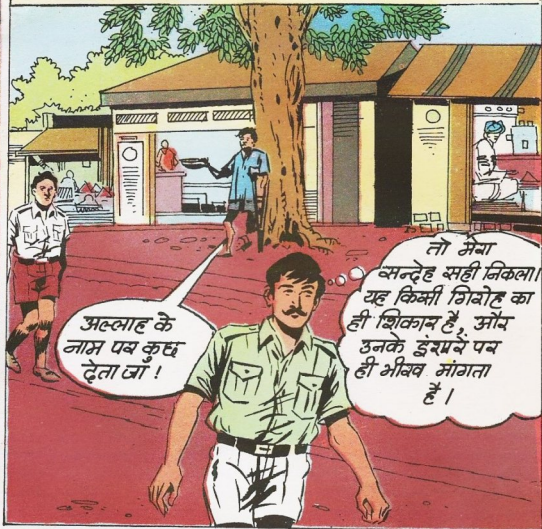
राम का काम पूरा हो चुका था। वह तेजी से आगे बढ़ गया।
अल्लाह के नाम पर कुछ देता जा !
तो मेरा सन्देह सही निकला। यह किसी गिरोह का ही शिकार है, और उनके इशारे पर ही भीख मांगता है।

एक लम्बा चक्कर काटने के पश्चात् राम-रहीम अपनी मोटर साइकिल के निकट पहुँचे।
क्या रहा राम ? तुम उससे कुछ कह रहे थे।
मेरा सन्देह ठीक निकला रहीम, वह किसी गिरोह के इशारे पर ही भीख मांग रहा है।
फिर राम ने उस भीख मांगने वाले लड़के से हुई बात चीत रहीम को बता दी।

क्या कोई संदिग्ध व्यक्ति तुम्हारी निगाह में आया ?

हां, वह देखो—उस पेड़ के नीचे जो सिगरेट पी रहा है।

अब सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं। हमें इनकी निगरानी करनी होगी।
मर गये। न जाने अब ये कब अपने अड्डे की ओर जाये।

तभी–
अरे रहीम! वह देखो, वह व्यक्ति उसी भिखारी लड़के की ओर जा रहा है।
वास्तव में। कहीं उसे सन्देह तो नहीं हो गया।

ओह-जरूर कहीं कोई गड़बड़ है।
तुम चुप क्यों हो गये?
मूर्ख, वह कोई पुलिस का ही आदमी होगा। क्या बक दिया तुमने उससे?
नहीं-नहीं, मैंने कुछ नहीं बका। म... मैंने तो सिर्फ इतना ही कहा था, ठीक है।
हरामजादे, तूने सब गड़बड़ कर दिया, अब तुझे मरना ही होगा।
नहीं-नहीं-इसमें मेरा को
कसूर नहीं-मुझे बचा लो
भइया, मैं तो अपना काम
ईमानदारी और मेहनत से
रहा हूँ-बॉस भी मेरी
से खुश हैं।
अगले ही पल दिलावर ने तेजी से अपने हाथ में पकड़ी हुई सुई जोर से उसके बाजू में घुसेड़ दी
उफ-!

और सूई चुभाने के बाद वह आगे बढ़ गया।
अरे, वह तो जा रहा है।
तुम यहीं रुककर भिखारी लड़के की निगरानी करो– मैं उस बदमाश का पीछा करता हूँ!

राम मोटर साइकिल द्वारा दिलावर का पीछा करने लगा।

जल्दी ही–
टैक्सी!
अच्छा हुआ मैं मोटर साइकिल लेता आया!

राम बराबर उसके पीछे लगा रहा–
न जाने कमबख्त कहां जा रहा है!

हुम्म-तो छोकरा अभी भी पीछे लगा हुआ है– अब तो इससे निपटना ही पड़ेगा।

कुछ देर बाद वे शहर से बाहर निकल आये।
यह तो शहर से बाहर आ गया! कहीं उसे पीछा किये जाने का संदेह तो नहीं हो गया?
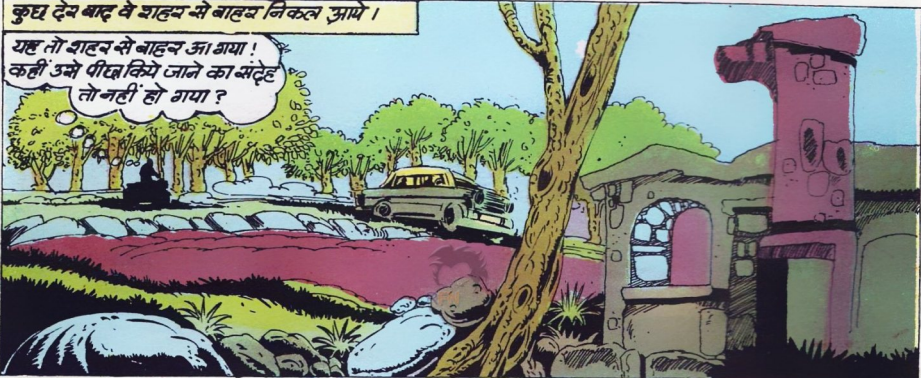
इधर रहीम उस भिखारी लड़के की निगरानी करते-करते अचानक चौंक पड़ा।
बीस मिनट हो गये– समझ में नहीं आता कि इसने अचानक आवाज लगानी क्यों बन्द कर दी!

तभी एक राहगीर ने जैसे ही भिखारी के कटोरे में सिक्का डाला–
आंय! इसे क्या हुआ?
अरे– यह तो गिर रहा है– किसी बेजान बुत की तरह!
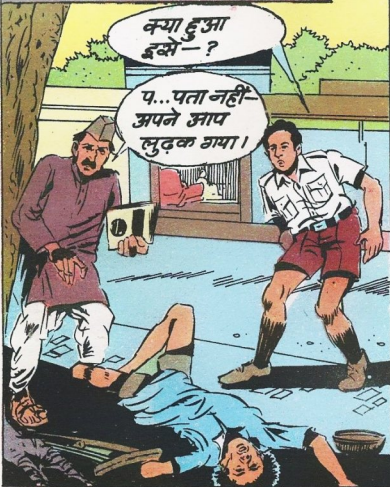
रहीम लपककर उसके निकट पहुंचा !
क्या हुआ इसे—?
प...पता नहीं—अपने आप लुढ़क गया।

जल्दी ही आते-जाते लोग भी कारण जानने के लिए वहां एकत्रित हो गये।
क्या हुआ?
क्या हुआ भाई?
यह तो मर चुका है।

प्लीज, आप में से कोई पुलिस को फोन करे। यह अपने आप नहीं मरा, मुझे संदेह है कि इसे ज़हर देकर मारा गया है।
लगता है तुम्हारा दिमाग खराब है।
बिल्कुल, भला इस भिखारी का कत्ल कौन करेगा, और क्यों करेगा?
अरे भाई, पुलिस इसमें क्या करेगी- जरूर भूख से मरा होगा- पुलिस की बजाए सफ़ाई विभाग को फोन करो- ले जायेगी इस लावारिस को उठाकर।
रहीम ने काफी देर तक लोगों को समझाने का प्रयास किया।

परन्तु किसी ने भी रहीम की बात पर ध्यान न दिया और जल्दी ही भीड़ तितर-बितर हो गई!
जरूर उसी बदमाश ने इसकी हत्या की है। शायद उसे सन्देह हो गया होगा।

उधर–
यह तो लाल खण्डहरों का इलाका कहलाता है, कहीं यहीं तो इनका अड्डा नहीं!

बच्चे–खुद-ब-खुद जाल में फंसता जा रहा है!

दिलावर जैसे ही खण्डहरों के भीतर एक स्थान पर पहुँचा–
खबरदार– कोई गलत हरकत करने की चेष्टा न करना–हाथ ऊपर उठा लो।
यह मैं दिलावर हूँ

ओह–आप!
क्या बॉस ने भेजा है?
अचानक कैसे आना हुआ?
यह सब बाद में बताऊँगा– फिलहाल समय नष्ट न करके उस छोकरे की खबर लो, जो मेरा पीछा करता हुआ यहाँ तक आ पहुँचा है।

ध्यान रहे, वह जीवित बचकर नहीं निकलना चाहिये– वरना... !
आप निश्चिंत रहिये, हमारा मारा पानी भी नहीं मांगता ।

जब राम खण्डहरों के भीतर पहुंचा–
यहां तो कोई नहीं, पता नहीं वह कम्बख्त कहाँ गायब हो गया !

तभी–
हा...हा...हा...!
आखिर फंस ही गये हमारे जाल में !
अब बचकर कहाँ जाओगे बच्चे !
हुम्म, तो यह उसकी चाल थी ।
तुम्हें तुम्हारी मौत ही यहां खींचकर लाई है ।
अपने भगवान को याद कर लो !

लेकिन इससे पहले कि बदमाश उस पर आक्रमण करते राम ने एक लम्बी उछाल भरी–
उफ–!

अरे बाप रे !
हाय !

ठहर हरामजादे !
आज मेरा चाकू तेरे खून से अपनी प्यास बुझाकर ही रहेगा।

पहले अपनी तो चिन्ता करो प्यारो !
धड़ाक !
उ...ई...ई...!
आह...!

तभी—
ओह-तो वह वहाँ छुपा है... फिलहाल तो भाग निकलने में ही भलाई है।

पीछा करो हरामजादो, बचकर नहीं जाना चाहिये—वरना तुम्हारी खैर नहीं।

रुक जाओ, वरना मारे जाओगे।

धांय

किसी तरह अपनी मोटर साइकिल तक पहुंचूं!

धांय

किसी तरह बचता-बचाता आखिरकार राम अपनी मोटर साइकिल तक पहुंचने में सफल हो गया।

अब तो बच्चो तुम मेरी धूल भी नहीं पा सकोगे।

ओफ-पकड़ो उसे—फायर—!

धांय

धांय

राम मोटर साइकिल को स्टार्ट कर झाड़ियों से बाहर ले आया!

रोको-वरना मारे जाओगे।

भागने की कोशिश बेकार है।
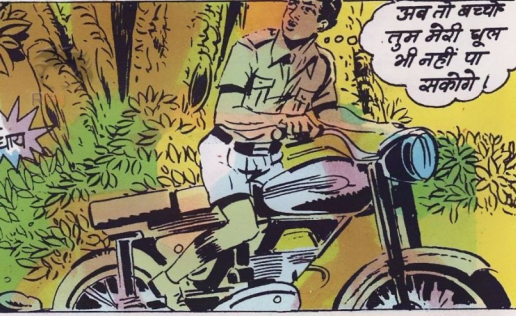
बदमाशों को रास्ता रोके देख राम पर जैसे पागलपन सवार हो गया। उसने मोटर साइकिल उन्हीं पर चढ़ा दी।
आह!
उफ़...!

बदमाश बुरी तरह बौखला उठे।
अर्र-र्र-र्र!
अरे बाप रे!

फिर इससे पहले कि वे दुबारा सम्भल पाते राम ने मोटर साइकिल पूरी गति से शहर की ओर दौड़ा दी।
ओह-निकल गया-दिलावर को खबर करो तुरन्त।

जब राम वहां पहुंचा, जहां रहीम को छोड़कर गया था-
अरे-वह भिखारी लड़का, क्या हुआ उसे? ओह, जरूर कोई बात है।
ओह! राम!

तभी राम की ही प्रतीक्षा में एक तरफ खड़ा रहीम उसके निकट पहुंच गया।
यह सब क्या है रहीम – क्या हुआ इसे?
मुझे सन्देह है कि उसी बदमाश ने इसकी हत्या कर दी!
और फिर उसने राम को सारी कहानी बता दी।

राम ने भी उसे आपबीती सुनाते हुए कहा–
मेरे विचार से अब हमें इन सारी बातों से चीफ को अवगत करा देना चाहिए।
तुम ठीक कहते हो राम, यह केस अब भयानक रूख पकड़ता जा रहा है।

अगले ही पल वे दोनों मोटर साइकिल पर सवार हो सीक्रेट सर्विस के हैड क्वार्टर की ओर उड़े चले जा रहे थे।
मेरे विचार से यदि लाल खण्डहरों पर तुरन्त ही छापा मारा जाये तो वे बदमाश पकड़ में आ सकते हैं।
बेकार है। अब कोई फायदा नहीं होगा, वे लोग मूर्ख नहीं, जो अब तक वहां बैठे अपने पकड़े जाने का इंतजार कर रहे होंगे।
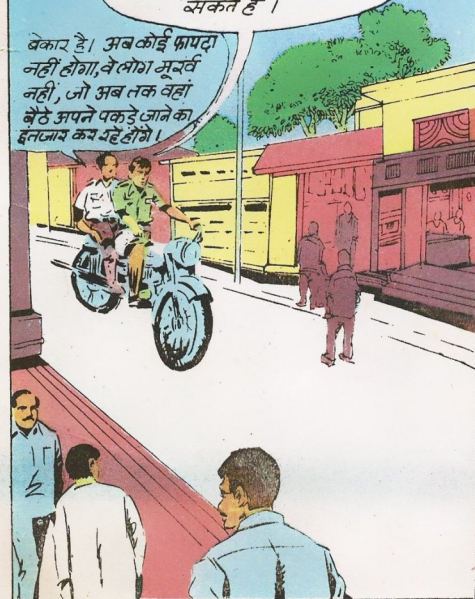
फिर कुछ देर बाद ही वे चीफ मुखर्जी के सामने थे–
गुड नून चीफ!
ओह तुम! कहाँ गायब थे सुबह से। मैं न जाने कितनी बार तुम्हारे घर फोन कर चुका हूँ।
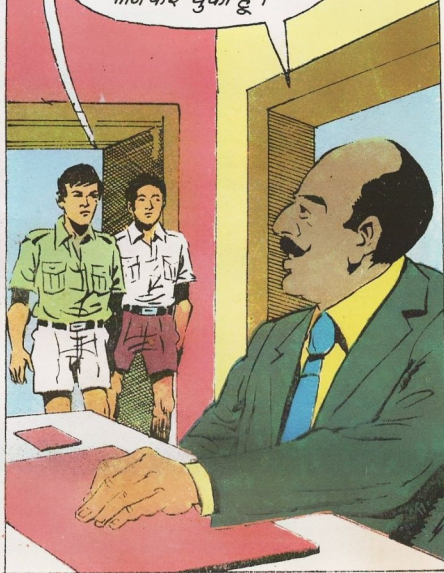
उत्तर में राम ने सारी कहानी चीफ मुखर्जी को सुना दी और अंत में बोला—

चीफ, अब इस केस को भयानक रुख पकड़ता देख और यह समझकर कि अपराधी कोई छोटा-मोटा नहीं है, उचित यही समझा कि आपको सारी स्थिति से अवगत करा दिया जाये।

यह तुमने बहुत अच्छा किया, तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि मैं स्वयं भी इसी केस के सम्बन्ध में तुमसे बात करना चाहता था।

ओह! कोई विशेष सूत्र आपके हाथ लगा चीफ?

हां- लेकिन इस केस को तुम मात्र बच्चों से भीख मंगवाने वाले गिरोह का ही केस मत समझो- सुनो, मैं तुम्हें विस्तार से बताता हूं।
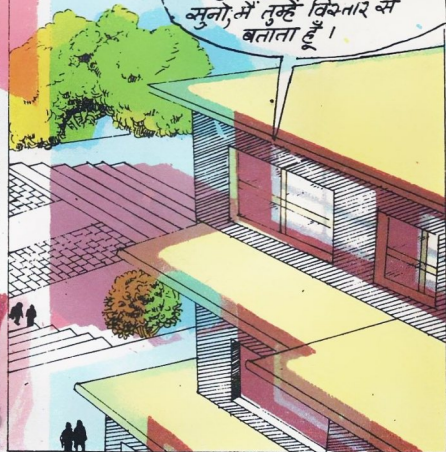
इन बच्चों के पीछे जो गिरोह काम कर रहा है, वह न केवल इनसे भीख ही मंगवाने का धंधा करवाता है, बल्कि नाजायज शराब की बिक्री, पॉकेट मारी, चोरी व राहजनी भी करवाता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि कुछ ऐसे लड़के पुलिस के हाथ लगे भी, जिन पर पुलिस को सन्देह है कि वे उसी गिरोह के लिए काम करते हैं— लेकिन वे असलियत किसी भी कीमत पर बताने के लिए तैयार नहीं।

अवश्य ही भय के कारण!

कुछ देर तक खामोश रहने के पश्चात् सहसा राम उछलता हुआ बोला—

☐ बुर्कापोश बॉस कौन था?

☐ क्या राम - रहीम अपनी योजना में सफल हो सके ?

☐ क्या राम-रहीम मौत के दूत को पकड़ने में कामयाब हो सके ?

☐ क्या लाल खण्डहर ही मौत के दूत का अड्डा था?

जानने के लिए पढ़ें - मनोज चित्रकथा के आगामी सैट में प्रकाशित - "अपने देश के दुश्मन"

PRINTED BY GOYAL OFFSET WORKS PH. : 7211428